27.5.2014

The Walking Stick

पिक्चर बुक और बच्चे

एम.एल.बी. स्कूल, बरखेड़ा पठानी, भोपाल

सीमा

हम सुबह 10.30 के करीब स्कूल पहुँचे। मेरे साथ अनन्या, प्राची व वीणा भी थीं। शुरुआत में बड़े व छोटे बच्चे एक साथ बैठे थे। बाद में छोटे व बड़े बच्चों को अलग कर दिया गया। हमारे साथ 5 से 13 साल की उम्र के कुल 13 बच्चे थे, जिसमें कि 7 लड़कियाँ और 6 लड़के थे।

शुरुआत हुई रेलगाड़ी चली छुक छुक से। सभी बच्चे कहानी के पात्रों से खुद को जोड़ के देख पा रहे थे। हालाँकि बच्चे ट्रेन से सुहागपुर, सलकनपुर, इटारसी जैसी आसपास की जगहों पर ही गए हैं लेकिन कुली, प्लेटफॉर्म, सुरंग, ट्रेन की खिड़की से दिखने वाले घर, ताश खेलना, ट्रेन में खाना खाना, गप्पें लगाना - यह सब उन्हें खुद के ट्रेन के सफर की यादों में ले गए।

कहानी सुनते-सुनते वो अपनी बात भी जोड़ते चले -

सुंरग आने पर बहुत मज़ा आता है।

बिलकुल डर नहीं लगता।

खिड़की वाली सीट पर बैठने से ज़्यादा मज़ा तो गेट पर बैठने में आता है।

सिगरेट पीने से सीना जलता है।

अरे ये तो गंगा मैया है।

यह बात थोड़ी अचरज भरी थी क्योंकि ये बच्चे जिस जगह के हैं वहाँ सब नर्मदा को ही जानते व पूजते हैं। इसलिए किसी भी बच्चे द्वारा नर्मदा मैया न बोलना थोड़ा हैरान कर देने वाला था।

अब बारी थी पिक्चर बुक द वॉकिंग स्टिक की। इसके पहले बच्चे लगातार 3-4 कहानियाँ सुन चुके थे, इसलिए शुरू-शुरू में ध्यान नहीं दे रहे थे। 5 से 8 साल तक की उम्र के बच्चों में से कुछ ने खेलना तो कुछ ने कुछ-कुछ और करना शुरू कर दिया था। केवल 9 से 13 साल की उम्र के बच्चे ही चित्रों को देखने, कहानी सुनने व बनाने में अपनी रुचि दिखा रहे थे।

कहानी की शुरुआत होती है एक सपने से। हम सभी सपने देखते हैं लेकिन क्या हम सपने में सफर भी करते हैं, अभी हमने ट्रेन में सफर करने के बारे में बाते कीं लेकिन ट्रेन के अलावा हम और किस-किस में सफर करते हैं?

बच्चों ने गिनाना शुरू किया - स्कूटर, ट्रेक्टर, कार, जीप, बाइक, बस, हैलीकॉप्टर, पैदल। कुछ बच्चों ने इसमें कछुआ, घोड़ा, हाथी, भैंस, शेर, गाय को भी जोड़ लिया।

धीरे-धीरे चित्रों को देखकर उन्होंने अपनी कहानी गढ़ना शुरू कर दी -

छड़ी चल रही है,

सीढ़ी आसमान तक जा रही है,

आसमान बादल में है,

वह अब बादल में बैठ गया है,

नीचे ट्रेन से धुआँ आ रहा है,

ट्रेन में कोयला भरा है इसलिए धुआँ निकल रहा है,

किसी को एरोप्लेन में कटी हुई लकड़ी तो किसी को उसके पंखे देखकर वो चिड़िया लग रही थी,

बलून में बैठकर ऊपर जा रहा है (बच्चे बलून को फुग्गा मान रहे थे),

पूँछ देखकर उसे कोई बन्दर तो कोई हनुमान बुला रहा था,

और उसने हाथ में जो पकड़ा हुआ था, उसे कोई स्लेट, तो कोई कॉपी बता रहा था,

पनचक्की को पंखा बोल रहे थे और कह रहे थे कि हमारे घर में भी तीन वाले पंखे हैं,

एंटीना को कम बच्चे ही पहचान पा रहे थे।

रेलगाड़ी चली छुक छुक और द वॉकिंग स्टिक दोनों ही कहानियों के चित्रों को बच्चों ने खूब पसन्द किया और उन्हें उन चित्रों में अपनी कहानी गढ़ने में भी काफी मज़ा आया।